संतोषी माता चालीसा

©Heygreetings.in

©Heygreetings.in

॥ दोहा ॥

बन्दौं सन्तोषी चरण रिद्धि-
सिद्धि दातार ।
ध्यान धरत ही होत नर दुःख
सागर से पार ॥
भक्तन को सन्तोष दे सन्तोषी
तव नाम ।
कृपा करहु जगदम्ब अब
आया तेरे धाम ॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

॥ चौपाई ॥

जय सन्तोषी मात अनूपम ।
शान्ति दायिनी रूप मनोरम ॥

सुन्दर वरण चतुर्भुज रूपा ।
वेश मनोहर ललित अनुपा ॥

श्वेताम्बर रूप मनहारी ।
माँ तुम्हारी छवि जग से न्यारी
॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

दिव्य स्वरूपा आयत लोचन ।
दर्शन से हो संकट मोचन ॥ 4 ॥

जय गणेश की सुता भवानी ।
रिद्धि- सिद्धि की पुत्री ज्ञानी ॥

अगम अगोचर तुम्हरी माया ।
सब पर करो कृपा की छाया ॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

नाम अनेक तुम्हारे माता ।
अखिल विश्व है तुमको ध्याता ॥

तुमने रूप अनेकों धारे ।
को कहि सके चरित्र तुम्हारे ॥ 8 ॥

धाम अनेक कहाँ तक कहिये ।
सुमिरन तब करके सुख लहिये ॥

विन्ध्याचल में विन्ध्यवासिनी ।
कोटेश्वर सरस्वती सुहासिनी ॥

कलकत्ते में तू ही काली ।
दुष्ट नाशिनी महाकराली ॥

Read Online

©Heygreetings.in

सम्बल पुर बहुचरा कहाती ।
भक्तजनों का दुःख मिटाती ॥
12 ॥

ज्वाला जी में ज्वाला देवी ।
पूजत नित्य भक्त जन सेवी ॥

नगर बम्बई की महारानी ।
महा लक्ष्मी तुम कल्याणी ॥

मदुरा में मीनाक्षी तुम हो ।
सुख दुख सबकी साक्षी तुम हो
॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

राजनगर में तुम जगदम्बे ।
बनी भद्रकाली तुम अम्बे ॥ 16 ॥

पावागढ़ में दुर्गा माता ।
अखिल विश्व तेरा यश गाता ॥

काशी पुराधीश्वरी माता ।
अन्नपूर्णा नाम सुहाता ॥

सर्वानन्द करो कल्याणी ।
तुम्हीं शारदा अमृत वाणी ॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

तुम्हरी महिमा जल में थल में ।
दुःख दारिद्र सब मेटो पल में ॥
20 ॥

जेते ऋषि और मुनीशा ।
नारद देव और देवेशा ।

इस जगती के नर और नारी ।
ध्यान धरत हैं मात तुम्हारी ॥

जापर कृपा तुम्हारी होती ।
वह पाता भक्ति का मोती ॥

Read Online

©Heygreetings.in

दुःख दारिद्र संकट मिट जाता ।
ध्यान तुम्हारा जो जन ध्याता ॥
24 ॥

जो जन तुम्हरी महिमा गावै ।
ध्यान तुम्हारा कर सुख पावै ॥

जो मन राखे शुद्ध भावना ।
ताकी पूरण करो कामना ॥

कुमति निवारि सुमति की दात्री
।
जयति जयति माता जगधात्री ॥

Read Online

©Heygreetings.in

शुक्रवार का दिवस सुहावन ।
जो व्रत करे तुम्हारा पावन ॥ 28 ॥

गुड़ छोले का भोग लगावै ।
कथा तुम्हारी सुने सुनावै ॥

विधिवत पूजा करे तुम्हारी ।
फिर प्रसाद पावे शुभकारी ॥

शक्ति-सामरथ हो जो धनको ।
दान-दक्षिणा दे विप्रन को ॥

Read Online

©Heygreetings.in

वे जगती के नर औ नारी ।
मनवांछित फल पावें भारी ॥ 32 ॥

जो जन शरण तुम्हारी जावे ।
सो निश्चय भव से तर जावे ॥

तुम्हरो ध्यान कुमारी ध्यावे ।
निश्चय मनवांछित वर पावै ॥

सधवा पूजा करे तुम्हारी ।
अमर सुहागिन हो वह नारी ॥

Read Online

©Heygreetings.in

विधवा धर के ध्यान तुम्हारा ।
भवसागर से उतरे पारा ॥ 36 ॥

जयति जयति जय संकट हरणी
।
विघ्न विनाशन मंगल करनी ॥

हम पर संकट है अति भारी ।
वेगि खबर लो मात हमारी ॥

निशिदिन ध्यान तुम्हारो ध्याता ।
देह भक्ति वर हम को माता ॥

यह चालीसा जो नित गावे ।
सो भवसागर से तर जावे ॥ 40
॥

Read Online

©Heygreetings.in

॥ दोहा ॥

संतोषी माँ के सदा बंदहूँ पग
निश वास ।
पूर्ण मनोरथ हो सकल मात
हरौ भव त्रास ॥
॥ इति श्री संतोषी माता
चालीसा ॥

©Heygreetings.in

Read Online